# चेतन भगत

# 5 पॉइंट समवन

नं. 1 बेस्टसेलर 5 Point Someone का हिंदी अनुवाद

# 5 पॉइंट समवन

## चेतन भगत

अनुवाद - श्रीमती संगीता देशवाल

---

मेरी माताजी
और
मेरी मातृ-संस्था आई.आई.टी
को
समर्पित

# आभार

इसे मेरी पुस्तक कहना सच नहीं होगा। बस, यह मेरा सपना था। इस दुनिया में बहुत लोग हैं, उनमें से कुछ इतने अच्छे हैं कि उन्होंने इस सपने को एक उपन्यास बना दिया, जिसे आप अपने हाथ में पकड़े हुए हैं। मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ और विशेषत: शाइनी एंटनी—विश्वसनीय परामर्शदाता, गुरु, दोस्त, जिन्होंने मुझे कहानी लिखने की आधारभूत बातें सिखाईं और अंत तक मेरे साथ रहीं। यदि वे इस दौरान मेरा साहस न बढ़ातीं और मुझे उत्साहित न करतीं तो मैं इस उपन्यास को लिखने का काम बहुत पहले ही छोड़ चुका होता।

जेम्स टर्नर, गौरव मलिक, जेसिका रोजनबर्ग, रितु मलिक, ट्रेसी आंग, एंजेला वांग और रिमझिम चट्टोपाध्याय—आश्चर्यजनक दोस्त, जिन्होंने हस्तलिपि को पढ़ा और अपनी बेबाक टिप्पणियाँ दीं। इस प्रक्रिया में सभी मेरे साथ रहे और मुझे और मेरी कभी-कभी नियंत्रित न होनेवाली भावनाओं को बहुत अच्छी तरह संभाला।

अनुषा भगत—एक पत्नी जो कभी सहपाठिनी थी, जिसने प्रारूप को सबसे पहले पड़ा। इस किताब में लिखी कुछ घटनाओं के झटके सहने के अतिरिक्त वह शांत रहाँ, क्योंकि उस पर इस उपन्यास को समृद्ध बनाने का कठिन काम था, न कि अपने पति को अस्त-व्यस्त कर देने का।

मेरी माँ रेखा भगत और भाई केतन, जिन्हें मुझ ऊपर अटूट विश्वास था, जो कभी- कभी पागलपन की सीमा पर होता था। उनके साथ मेरे संबंध आनुवंशिकता से कहीं आगे हैं, और मुझे भी, अन्य लेखकों की तरह, उनकी अविवेकपूर्ण सहायता की आवश्यकता थी।

आई.आई.टी. के मेरे दोस्त आशीष (गोलू) जौहरी, बी.के. मनु, शैंकी, पप्पू, मनहर, बी.पी., राहुल, मेहता, पेगो, असीम, राजीव जी., राहुल, लवमीत, पुनीत, चैपर और अन्य सभी। यह काल्पनिक साहित्य है, लेकिन कल्पना के लिए भी असली प्रेरणा की आवश्यकता होती है। मैं उन सभी को इतना प्यार करता हूँ कि उनके बारे में एक पुस्तक लिख सकता हूँ। ऐ, देखो, क्या मैंने नहीं लिखा?

हांग–कांग में मेरे दोस्त, मेरे सहकर्मी, मेरे योग गुरु और अन्य, जो मेरे आस–पास हैं, मुझे प्यार करते हैं और जीवन को आनंदमय बनाते हैं।

# भूमिका

मैं पहले कभी एंबुलेंस में नहीं बैठा था। यह काफी डरावना था, मानो किसी अस्पताल को कहा गया हो कि सामान बाँधो और चलो। दो बैड उपकरणों, कैथेटर्स, ड्रिप्स और दवाई के डिब्बों से घिरे हुए। जब आलोक को उसके अंदर लिटाया जा रहा था तो मेरे और रेयान के खड़े होने के लिए भी उसके अंदर जगह नहीं थी। मैं समझता हूँ कि तेरह फ्रैक्चर्स के बाद उसको एक बैड मिलना ही चाहिए। आलोक के खून से पूरी तरह सनी हुई चादरों को देखकर यह कहना मुश्किल था कि ये चादरें सफेद थीं। वहाँ लेटे हुए आलोक को पहचानना मुश्किल था। उसकी आँखें पलट गई थीं और बिना दाँतवाले बूढ़े आदमी की तरह उसकी जीभ मुँह से बाहर लटक रही थी। चार दाँत टूट चुके थे, डॉक्टर ने हमें बाद में बताया।

उसके हाथ-पैर निश्चल हो गए थे, ठीक उसके पिता के दाहिने हिस्से की तरह। दाहिना घुटना ऐसे मुड़ा था कि आप सोचेंगे कि आलोक हड्डी-रहित था। वह स्थिर था— और अगर मुझे शर्त में अपना रुपया लगाना होता तो मैं कहता कि आलोक मर चुका है। ‘अगर आलोक इस संकट से निकल जाता है तो मैं अपने पागल और झक्की दिनों पर एक पुस्तक लिखूँगा। मैं जरूर लिखूँगा।’ मैंने कसम ली। यह एक बेतुका वायदा था, जो मैंने अपने आपसे किया; जबकि आप बहुत परेशान हैं और पूरे पचास घंटों से सोए नहीं...।

# क्रम-सूची


1. विकट शुरुआत
2. टर्मिनेटर
3. नाजुक पैर और कार
4. सीमा रेखा
5. लड़ाई नहीं, पढ़ाई
6. फाइव पॉइंट समथिंग
7. आलोक के विचार
8. एक साल बाद
9. तंत्र का दबाव
10. सहयोग का प्रभाव
11. उपहार
12. नेहा के विचार
13. एक और साल बाद
14. वोदका
15. ऑपरेशन पेंडुलम
16. मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन : 1
17. मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन : 2
18. मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन : 3
19. मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन : 4
20. मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन : 5
21. मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन : 6
22. रेयान के विचार
23. काजू बरफी
24. क्या हम यह कर पाएँगे?
25. पत्र का रहस्य
26. डैडी से मुलाकात
27. फाइव पॉइंट समवन

# 1

## विकट शुरुआत

इससे पहले कि मैं पुस्तक की शुरुआत करूँ, मैं आप सभी को यह साफ बताना चाहता हूँ कि यह पुस्तक किस बारे में नहीं है। यह पुस्तक कॉलेज के जीवन के मार्गदर्शन के लिए नहीं है। इसके विपरीत, यह एक उदाहरण है कि कैसे आपके कॉलेज के साल खराब हो सकते हैं। यह आपकी अपनी सोच है कि आप इससे सहमत हैं या नहीं। मैं ऐसी उम्मीद करता हूँ कि रेयान और आलोक, जो पागल हैं, शायद यह पढ़ने के बाद वे मुझे मार डालें; लेकिन उसकी मुझे चिंता नहीं। मेरा मतलब है कि अगर वे चाहते तो वे अपने विचार लिख सकते थे। लेकिन आलोक तो लिख ही नहीं सकता और रेयान वैसे तो वह जो चाहे कर सकता है, लेकिन वह बहुत ही आलसी है। इसलिए यह कहना चाहता हूँ कि यह मेरी कहानी है। मैं जैसा चाहूँ वैसा बताऊँगा।

मैं एक और बात बताना चाहता हूँ कि यह पुस्तक और क्या नहीं बताती है। यह आपको आई.आई.टी. में प्रवेश लेने में मदद नहीं करती। मैं यह सोचता हूँ कि दुनिया के आधे पेड़ों का इस्तेमाल आई.आई.टी. की परीक्षा में प्रवेश करने के लिए बनी गाइड्स में होता है। उनमें से अधिकतर गाइड्स बकवास हैं, लेकिन इससे अधिक मददगार होंगी।

रेयान, आलोक और मैं शायद इस दुनिया में आखिरी होंगे, जिनसे आप आई.आई.टी. में प्रवेश के लिए कुछ जानकारी लेना चाहें। हम आपको यह सलाह दे सकते हैं कि आप अपने को पुस्तकों के साथ दो वर्ष तक एक कमरे में बंद कर लें और उसकी चाबी फेंक दें। अगर आपके हाई स्कूल के दिन मेरे जितने खराब जा रहे हों तो शायद पुस्तकों के ढेर के साथ रहना कोई बुरा विचार नहीं होगा। मेरे स्कूल के आखिरी दो साल बहुत ही खराब थे, और अगर आप भी मेरी तरह अपने स्कूल की बास्केट बॉल टीम के कप्तान नहीं हैं और आपको गिटार भी बजाना नहीं आता हो, तो आपके दिन भी उतने ही खराब होंगे। मगर मैं उन चीजों में वापस जाना नहीं चाहता हूँ।

मैं सोचता हूँ कि मैंने अपना डिसक्लेमर बता दिया और अब उपन्यास लिखना शुरू करता हूँ।

□

इसलिए मुझे कहीं-न-कहीं से तो शुरुआत करनी ही है और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में मेरा पहला दिन और रेयान व आलोक से पहली मुलाकात से बेहतर और क्या हो सकता है; हम कुमाऊँ हॉस्टल की दूसरी मंजिल पर साथ-साथवाले कमरों में रहते थे। प्रथा के अनुसार आधी रात को सीनियर्स ने हमें बालकनी में रैगिंग के लिए घेर लिया। हम तीनों सावधान खड़े थे और तीन सीनियर हमारे सामने खड़े थे और मैं अपनी आँखों को मल रहा था। अनुराग नामक सीनियर दीवार पर झुककर खड़ा था। दूसरा सीनियर, जो मुझे सस्ते पौराणिक टी.वी. कार्यक्रम के दानव जैसा नजर आ रहा था, जो छह फीट लंबा, जिसका वजन 200 किलो ग्राम से ज्यादा और बड़े-बड़े गंदे दाँत ऐसे लग रहे थे कि दस वर्षों से दाँत के डॉक्टर को न दिखाए हों। वैसे तो वह खतरनाक दिख रहा था, पर बोलता कम था और वह अपने बॉस बाकू के लिए भूमिका बनाने में व्यस्त था। बाकू देखने में सूखे काटे के समान था। उसके शरीर से बदबू आ रही थी।

"अरे, तुम ब्लडी फ्रेशर्स सो रहे हो? गधो! परिचय कौन देगा?" बाकू चिल्लाया।

"मेरा नाम हरि कुमार है सर, मेकैनिकल इंजीनियरिंग स्टूडेंट, ऑल इंडिया रैंक 326।" पर अगर मैं ईमानदारी से कहूँ तो उस समय मैं बहुत डरा हुआ था।

"मैं आलोक गुप्ता हूँ सर, मेकैनिकल इंजीनियरिंग, रैंक 453।" आलोक ने कहा, जब मैंने उसे पहली बार देखा। उसका कद मेरे जितना ही था पाँच फीट पाँच इंच—वाकई बहुत छोटा और उसने मोटे लेंस का चश्मा एवं सफेद कुरता-पाजामा पहन रखा था।

"रेयान ओबेरॉय, मेकैनिकल इंजीनियरिंग, रैंक 91, सर।" रेयान ने भारी आवाज में कहा, जिससे सारी आँखें उसकी तरफ मुड़ गईं। रेयान ओबेरॉय, मैंने अपने मन में दोहराया। ऐसा लड़का जो आई.आई.टी. में कम ही देखने को मिलता है; बहुत ऊँचा कद, सुडौल शरीर और बहुत ही सुंदर। उसने ढीली ग्रे रंग की टी शर्ट पहन रखी थी, जिस पर बड़े नीले अक्षरों में 'GAP' लिखा था और चमकीली काले रंग की घुटनों तक की निकर पहन रखी थी। मैंने सोचा कि जरूर उसके रिश्तेदार विदेश में रहते हैं, क्योंकि सोते समय 'GAP' के कपड़े कोई नहीं पहनता।

"यू बास्टर्ड!" बाकू चिल्लाया, "अपने कपड़े उतारो!"

"ऐ बाकू, पहले इनसे थोड़ी बात कर लें।" दीवार की तरफ झुककर सिगरेट पीते हुए अनुराग ने रोका।

"नहीं, कोई बात नहीं करेंगे!" बाकू ने अपना सूखा हाथ उठाते हुए कहा, "नहीं, कोई बात नहीं करो, सिर्फ उनके कपड़े उतारो।"

एक दूसरा दानव थोड़ी-थोड़ी देर में अपने नंगे पेट पर हाथ मारते हुए हम पर हँस रहा था। कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था, इसलिए हम अपने कपड़े उतारकर आत्मसमर्पण कर चुके थे। बाकू भी हँस रहा था और हम सभी सहमे खड़े थे।

जब हम निर्वस्त्र खड़े थे तब हम सबके शरीरों में अंतर साफ नजर आ रहा था;

क्योंकि मैं और आलोक अपने गुब्बारे जैसे शरीर को छिपाने के लिए पैर के अँगूठों को जमीन पर दबाकर चित्र बनाने की कोशिश में लगे थे। वहीं रेयान का सुगठित शरीर बिलकुल ऐसा जैसा कि जीव विज्ञान की पुस्तकों में दिखता है। दूसरी तरफ मैं और आलोक बिलकुल बेढंगे।

बाकू ने आलोक को और मुझे आगे बढ़ने के लिए कहा, ताकि सीनियर्स हमें अच्छे से देख सकें और जोर से हँसें।

"देखो, इन छोटे बच्चों को। इनकी माँ ने इन्हें तब तक खिलाया जब तक कि इनके पेट न फट जाएँ।" बाकू ने हँसकर कहा

दानव भी उनके साथ हँसा। धुएँ के गुबार के पीछे दूसरी सिगरेट बुझाते हुए विरोध प्रभाव दिखाते हुए अनुराग मुसकराया।